वेदप्रकाश 'वटुक' के काव्य में अभिव्यक्त नारी ('इतिहास की चीख' के संदर्भ में)

डॉ. विनायक बापू कुरणे *

सारांश :

वेदप्रकाश 'वटुक' हिंदी साहित्य संसार के मशहूर कवि हैं। आपका कविता संग्रह 'इतिहास की चीख' में इतिहास और वर्तमान से जुड़ी अनेक कविताएँ हैं। विशेष रुप से नारी के कई प्रश्नों को कविता में अंकित किया है। पुरुष प्रधान संस्कृति में नारी पर हो रहे अन्याय—अत्याचार का चित्रण कवि ने किया है। कवि ने अपनी अशिक्षित बहन के ममतामयी प्यार तथा उसकी अन्याय का विरोध करने की शक्ति का परिचय दिया है। तस्लीमा नसरीन की बातों को स्पष्ट करते हुए उसके परिणामों को अंकित किया है। वृद्ध एकाकी माँ के दु:ख को विशद किया है।

पारिभाषिक शब्द : संस्कृति, अभिशप्त, हवन—कुण्ड, आन्दोलन, विश्वमण्डी, निर्वासित, धर्म सिद्धान्त, प्रतिरोध, संवेदनशीलता, सुश्रुषा आदि ।

प्रस्तावना :—

वेदप्रकाश 'वटुक' हिंदी साहित्य संसार के मशहूर कवि है। इक्कीसवीं सदी में हिंदी कवियों में उनकी एक अलग पहचान है। आपका कविता संग्रह 'इतिहास की चीख' में इतिहास और वर्तमान से जुड़ी अनेक कविताएँ हैं। इन कविताओं में अनेक विषयों को रेखकिंत किया गया है। विशेष रुप से नारी के कई प्रश्नों को कविता में चित्रित किया है। पौराणिक नारियों की समस्याओं को उठाते हुए वर्तमान कालिन संदर्भों को स्पष्ट किया है। पुरुष प्रधान संस्कृति में स्त्री के दोयम स्थान को कवि ने अंकित किया है।

हजारों वर्षों से चली आ रही पुरुष प्रधान संस्कृति का प्रभाव पुरुषों पर है। इसी मानसिकता के कारण नारी का शोषण कर उस पर अत्याचार हो रहे है। इस कारण नारी अनेक यातनाएँ झेल रही है। पुरुष ने उसे भोग की वस्तु समझकर उसका उपयोग किया। नारी को घर की चार दीवारी में बंद कर पुरुष के अधिन किया है। नारी सदियों से दासी जैसा जीवन व्यतीत करती रही। पुरुष आज भी अपनी पत्नी को अपने प्रभाव में रखना चाहता है। इसलिए पुरुष चाहता है कि उसे जो पत्नी मिले वह उसका हर कहना माने। उसकी इच्छा के अनुसार व्यवहार करें । ऐसी लड़की की तलाश में वह रहता है। वह चाहता है कि यह लड़की सारी सीमाएँ तोड़कर उसकी गोद में गीरे। कवि 'वटुक' की कविता 'कल उसे' इसका सशक्त उदाहरण है। कविता लिखते हैं—

'कल उसे
एक लड़की की तलाश थी

जो सारी सीमाएँ तोड़कर
आ गिरती
उसकी गोद में'१

पुरुष पत्नी के रुप में सुशील, शांत, लडकी चाहता है। लेकिन अपनी पत्नी को मुट्ठी में रखने वाला पुरुष अपनी बेटी को भी सीमा के दायरे में रखता है। लेकिन उसे वर ढुंढते समय अमीर और कमजोर वर की तलाश करता रहता है। कवि ने लिखा है—

'आज उसे
सीमाओं में बँधी
लड़की के लिए तलाश है
एक लड़के की
जिसे खरीदने का सामर्थ्य
हो उसके
कमजोर, काँपते हाथों में'२

स्त्री को सीमा के दायरों में रखकर पुरुष उसका शोषण करा रहा है। व्दापर, त्रेता युग से स्त्री पर अन्याय हो रहा हैं। सीता, अहल्या, शूर्पणखा, द्रौपदी आदि को भी पुरुष सत्ता से प्रताड़ित होना पडा है। राज्य राम का हो या रावण का स्त्री ही अभिशप्त हुई है। स्त्री का ही नाक कट गया है। अपहरण उसका ही हुआ है। कवि वटुक 'राज्य राम का हो या रावण का' इस कविता में लिखते हैं—

'राज्य राम का हो या रावण का
प्रजा सीता हो या शूर्पणखा
अभिशप्त होगी अबला ही
नाक उसी की काटी जायेगी
अपहरण उसी का होगा' ३

राम आहूजा लिखाते हैं—''भारतीय समाज में महिलाएं एक लम्बे काल से अवमानित, यातना और शोषण का शिकार रही हैं, जितने काल के हमारे पास सामाजिक संगठन और पारिवारिक जीवन के लिखित प्रमाण उपलब्ध है, उनके आधार पर यह कहा जा सकता है। '' ४ स्त्री के साथ इतना अन्याय हो गया है कि उसे ही पत्थर होना पडा है। हवन—कुण्ड में उसे ही जाना पडा है। कवि आगे लिखते हैं—

अग्नि—परीक्षा, वनवास
धरती में समाने को
पत्थर अहल्या को ही होना है
हवन—कुण्ड में हविषा होगी सती की ही
कृष्ण—भीष्म के होते हुए भी
दाँव पर लगेगी द्रौपदी ही ' ५

कवि ने अपनी अशिक्षित बहन के ममतामयी प्यार का चित्रण किया है। इस बहन ने स्कूल का चेहरा भी नहीं देखा था। उसे कोई कला का ज्ञान भी नहीं था। उसने किसी महिला आन्दोलन में हिस्सा भी नहीं लिया था। ऐसा होते हुए भी उसमें अन्याय का विरोध करने की शक्ति थी। कवि ने ' मेरी बहन ' कविता में लिखा है—

' उसमें शक्ति थी
निरंकुश शासन के सामने
खड़े होन की
अन्याय का विरोध करने की
और उसकी ममता भरी
निष्काम गोद थी

ऐसी सूरम्य स्थली
जहाँ मैं लेट सकता था ' ६

कवि की बहन नारायणी उनके साथ खेत में घास खुदवाने का काम करती थी। वह नवजीवन को निर्माण करने का कार्य करती थी। 'याद मत दिलाओ' इस कविता में कवि ने लिखा है—

'उस नारायणी बहन को
जो मेरे साथ खोदती हुई घास
रचती थी नवजीवन की गीता' ७

नई सहस्त्राब्दी के युग में जर्जर रुढ़ी—परम्परा को त्याग कर नये विचारों को अपनाना है। नये युग मे किसी सीता को अग्नि—परिक्षाएँ न देनी पडे। द्रौपदी के वस्त्र कोई दु:शासन नहीं उतरेगा। किसी अहल्या के साथ कोई षड़यंत्र रचकर उसका शिकार नहीं करेगा। नई सहस्त्राब्दी के युग में स्त्री का रक्षण होगा। परमानन्द श्रीवास्तव लिखते है।,''भूमण्डलीकरण के दौर में एक ओर स्त्रिया अंतरिक्ष यात्रा पर है।, दूसरी ओर, बसों—ट्रेनों तक में सुरक्षित नहीं हैं। स्त्री उत्पीड़न है तो है, क्या फर्क पड़ता है। विश्वमंडी में आज भी स्त्री खरीददार से अधिक बिकाऊ वस्तु है। एक ओर अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर स्त्री सशक्तीकरण के दावे हैं दूसरी ओर मजदूर स्त्रियाँ आज भी सामन्तों के लिए शोषण का बहाना है।'' ८ कवि'नव सहस्त्राब्दी के प्रवर्तक क्षण से ' इस कविता में लिखते हैं—

' कि उसके बाद नहीं होगी
सीताओं की अग्नि—परिक्षाएँ
नहीं उतारेगा कोई दु:शासन
किसी द्रौपदी के वसन
अहल्या के साथ नहीं रचेंगे
सत्ता के इन्द्र षड़यंत्र
शिकार नहीं होगी वे
गौतम ऋषियों के दम्भ—दर्प—शाप की ' ९

कवि आशावादी है। वे चाहते है कि संसार में सब सुखी हो , किसी को कोई समस्या न हो , किसी के बीच झगड़े ने हो। सब जगह शांति हो। मजदूरिन के बच्चे को बिना रोये दूध मिल जाये ऐसी इच्छा कवि रखते है। 'कभी—कभी' कविता में कवि ने लिखा है—

मजदूरिन के बच्चे को
मिल जाता है बिना रोये
माँ के स्तनों का दूध' १०

इसी तरह सास—ननद—बहू घर में समापन करे। मिल जुलकर काम करें। कवि़लिखते है—

सास—ननद—बहू
प्यार से समापन कर लेती है
घरेलू काम
कभी—कभी
बिना देखे ही पूरा हो जाता है ' ११

तस्लीमा नसरीन ने धर्म की सच्ची बात कहकर अपने ही देश में निर्वासित हुई। उसके देश के लोग उसकी जान की दुश्मन हो गई। तस्लीमा अपनी जान बचाकर वहाँ से भाग गई । कवि 'तस्लीमा के नाम' इस कविता में उसे उद्देश्यकर कहते हैं—

'तस्लीमा, तुम्हारा कोई देश नहीं है।

तुम्हारा नाम काट दिया गया है।
चापलूसों, चारण—भाटों और
चमचों की उस सूची से
जो देश के नक्शे से बड़ा
बनाते हैं चित्र ' **१२**

तस्लीमा ने भगवान के दलालों की पोल खेल दी है। धर्म ने स्त्रियों को हजारों बेड़ियों में कैद कर के रखा है। इन बेड़ियों को तस्लीमा स्वीकार नहीं करती। वी.एन.सिंह लिखते हैं—''पुरुषों ने 'आधी दुनिया' को किस तरह वस्तु बनाकर छोड़ा है। धर्म के सिद्धान्त औरतों का गुनगान करने में थकते नहीं है।, पर व्यवहार में बिल्कुल उल्टा मिलता है। आज भी किसी न किसी रुप में वह पुरुष के अधीन है। जब कभी औरतों ने अपने हक के लिए आवाज बुलन्द की, कट्टरपंथियों ने कहना शुरु किया 'मजहब खतरे में है' '' **१३** इसलिए वह धर्म के लिए विष—बेल बन गई है। कवि आगे लिखते है—

तस्लीमा, तुम्हारा कोई धर्म नहीं है
क्योंकि तुम भगवान के दलालों की
हजारों बेड़ियाँ स्वीकार नहीं करतीं
तुम एक धर्म के लिए विष—बेल हो
ते दूसरे के लिए अन्य धर्मों को
मरने का दुष्चक्र' १४

तस्लीमा का इस्तेमाल कठमुल्ले अपने फायदे के लिए कर रहे हैं। तस्लीमा दुधारी तलवार के समान है। अपने धर्म ग्रंथ को पवित्र बनाने के लिए उसके खून की जरुरत है। कवि ने लिखा है—

तस्लीमा, तुम वह दुधारी तलवार हो
जिसका प्रयोग
हर कठमुल्ला कर रहा है
तुम्हारा सिर—धड़ अलग करने को
तुम्हारे खून से नहलाये बिना
पवित्र हो नहीं सकता
उनका धर्म—ग्रंथ' **१५**

आज समाज से मानव की संवेदनशीलता समाप्त हो चुकी है। समाज में वृद्ध स्त्री—पुरुष एकाकी जीवन जीने के लिए विवश है। बेटे और बेटियॉ बड़े होने के बाद अपना दूसरा घर बसाते है या वृद्ध माँ—बाप को घर से बेघर कर देते है। कई उन्हें वृद्धाश्रम में रखते है। घर में सब कुछ ऐश्वर्य है। साधन—सुविधा है। लेकिन अपना कहने वाले उन्हें छोड़कर चले गये है। और वृद्ध स्त्री—पुरुष एकाकी जीवन जीने के लिए विवश है। अपनी सुश्रुषा के लिए परिचारिका तो नियुक्त करते है लेकिन अपने स्नेह का कोई नहीं होता। और एक दिन एकाकी उनकी मृत्यु हो जाती है। कवि ने 'मनुजता की मौत' इस कविता में ऐसी ही एक माँ की मृत्यु की बात की है—

'परिचारिकाओं की खरीदी क्षीण—सी
मुस्कान में, माँ मर गई वे व्यस्त थे जब
बृहत् स्वप्न—वितान में।

यह मौत वृद्धा की नहीं, यह मौत है एकान्त की, पीड़ा भरे नस—नस बदन शापित मनस विकलान्त की।' **१६**

मनुष्य भावना शून्य बन गया है। डॉ. कमलेश त्रिवेदी लिखते है—''मानव को भावना शून्य बनाने में इस यदी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मानव संबधों में

भाट, मानव संबंधों की नई परिभाषा दी, रिश्तों के नये रुप दिये। मानव को प्रकृति से दूर हटाकर कृत्रिम रुप में प्रकृति के प्रति आकर्षण जगाया। मनुष्य को भ्रम और विस्मृति का शिकार बनाया। भटकाव वाली स्थिति उत्पन्न की है। दुनिया भर की जानकारियों से लैंस होने के बावजूद अपने आप से बेखबर रहना सिखाया। उपयोग करो और फेंक दो—यूज एण्ड थ्रो—वाली विचारधारा का आदी बनाया।'' **१७** अपने माँ—बाप के साथ भी युवा पिढी —यूज एण्ड थ्रो— जैसा व्यवहार कर रही है।

निष्कर्ष :

वेदप्रकाश 'वटुक'ने नारी के विविध ा रुपों एवं उसकी समस्याओं को यथार्थता से चित्रित किया हैं। साथ ही उस पर हो रहें अत्याचार और शोषण का चित्रण किया है। पुरुष प्रधान संस्कृति में होने वाले अन्याय—अत्याचार का प्रतिरोध करने की बात भी कवि ने की है। तस्लीमा नसरीन का विद्रोह और उसके परिणाम का चित्रण कवि ने किया है। वृद्ध, एकाकी जीवन जीने वाली स्त्री के दु:ख का चित्रण करके मनुष्य की भावना शून्यता को अंकित किया है। अत: 'वटुक' की कविताओं में यथार्थ रुप में नारी अभिव्यक्त हुई है।

संदर्भ सूची—

१. वेदप्रकाश 'वटुक' —इतिहास की चीख, भारतीय साहित्य प्रकाशन,मेरठ सं.२००० , पृष्ठ—२२

२. वही, पृष्ठ—२२,२३

३. वही, पृष्ठ—२६

४. सामाजिक समस्याएं—राम आहुजा, रावत प्रकाशन, जयपुर सं.२०१९, पृष्ठ, २२२

५. वेदप्रकाश 'वटुक' —इतिहास की चीख, भारतीय साहित्य प्रकाशन,मेरठ सं.२००० , पृष्ठ—२६

६. वही, पृष्ठ—३६,३७

७. वही, पृष्ठ—७७

८. आजाद औरत कितनी आजाद— परमानन्द श्रीवास्तव, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली सं.२००८, पृष्ठ १७

९. वेदप्रकाश 'वटुक' —इतिहास की चीख, भारतीय साहित्य प्रकाशन,मेरठ सं. २०००, पृष्ठ—५३

१०. वही, पृष्ठ—९०

११. वही, पृष्ठ—९०

१२. वही, पृष्ठ—९३

१३. नारीवाद— वी.एन.सिंह, जनमेजय सिंह , रावत प्रकाशन, जयपुर सं. २०१८ पृष्ठ—२१३

१४. वेदप्रकाश 'वटुक' —इतिहास की चीख, भारतीय साहित्य प्रकाशन,मेरठ सं.२००० , पृष्ठ—९४

१५. वही, पृष्ठ—९४

१६. वही, पृष्ठ—१५८

१७. इक्कीसवीं सदी की कविता सम्वेदना के नये स्वर —सं. डॉ. शैलजा भारव्दाज (इक्कीसवीं सदी का समाज और बद्री नारायण की कविता—डॉ. कमलेश त्रिवेदी), चिन्तन प्रकाशन,कानपुर सं. २०१२, पृष्ठ—५३